हिमालय का सांस्कृतिक और सीमान्तीय सन्दर्भ

ए० सी० सिन्हा

हिमालय को तथ्यपरक रूप से समझने के संदर्भ में कुछ प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठते हैं। हिमालय क्या है? हिमालय कहाँ है? हिमालय क्या इंगित करता है? इन प्रश्नों के उत्तर भी तत्क्षण मिलते हैं: हिमालय एक पर्वतीय विस्तार है; विश्व का एक विशेष क्षेत्र है। हिमालय एशिया महादेश की हृदयस्थली में चीनी और भारतीय उपमहाद्वीपों के मध्य अवस्थित है। अध्येता के मानस पटल पर हिमालय तत्काल ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक सम्बन्धी विशेषताएं अंकित करता है। वैज्ञानिक हिमालय और मानव का सम्बन्ध बहुत प्राचीन मानते हैं। थोड़ी देर के लिए यदि मिथक काल और प्राचीन ऐतिहासिक काल को छोड़ भी दें, तो भी हम भारत, तिब्बत और अफगानिस्तान या पामीर-पार के देशों की संस्कृति और धर्म पर हिमालय की अमिट छाप पाते हैं। हिमालय के साये में रहने वाले लघु-समुदायों का सांस्कृतिक जीवन तो हिमालय की गरिमा का गान है। भारतीय परम्परा में तो ऋषि-मुनि-गण हिमालय को अपनी तपोभूमि मानते रहे हैं। आज हिमालय का प्रसार चीन, रूस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान और बर्मा तक व्याप्त है। परन्तु विश्व मानस के सांस्कृतिक पटल पर हिमालय मुख्यतः भारत के ही संदर्भ में विख्यात है। इस प्रकार हमारे समक्ष हिमालय के दो स्वरूप उभरते हैं: प्रथम, हिमालय का परम्परागत सांस्कृतिक संदर्भ और दूसरा, हिमालय का राजनैतिक सीमान्तीय संदर्भ।

प्रायः भूगोल के विद्वान हिमालय के दक्षिण में अवस्थित भूभाग को दक्षिणी एशियाई या भारतीय उपमहाद्वीप की संज्ञा देते हैं। भूविज्ञान, भूसंरचना एवं जलवायु के आधार पर इन विद्वानों ने भारत को तीन चार या पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया है। प्रायः सभी भूगोलवेत्ता इस बात से सहमत हैं कि हिमालय उपरोक्त विभाजित क्षेत्रों में से निश्चित रूप से एक है। कहने की आवश्यकता नहीं कि हिमालय की गगनचुम्बी चोटियां भारतीय उपमहाद्वीप को उत्तर एशिया की बर्फीली वायु से वंचित करती हैं। दूसरी तरफ ये हिमालयी पर्वतीय दीवारें भारतीय

ए० सी० सिन्हा, अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, नार्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग (मेघालय)

महासागर से उठने वाली मौसमी हवाओं को रोककर वर्षा करती हैं। इस प्रकार भौगोलिक रूप से हिमालय भारतीय भूमि को अपना निश्चित व्यक्तित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूरब से पश्चिम तक इस पर्वतीय भूभाग का विस्तार प्रायः ५,००० किलोमीटर आंका गया है। इसका पश्चिमी छोर अरब सागर के तट पर अवस्थित गवादर के पास से आरंभ होकर बलुचिस्तान और सुलेमान पहाड़ी श्रृंखलाओं को पार करता, हिन्दुकुश की गुफा-कन्दराओं से बढ़कर नंगा पर्वत तक लगभग १५०० किलोमीटर लम्बा है। हिमालय की दूसरी भुजा के रूप में इसका पूर्वी छोर बंगाल की खाड़ी के पास आराकान (बर्मा) की पहाड़ियों के साये में लुशाई पहाड़ियाँ और पटकोई पहाड़ियाँ होता हुआ नमचा-बरवा तक प्रायः एक हजार किलोमीटर पड़ता है। इन दोनों भुजाओं या विशेष रूप से सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों के बीच अवस्थित केन्द्रीय हिमालयी मेहराब या विशाल हिमालय प्रायः २,५०० किलोमीटर लम्बा माना जाता है। साधारण लोक मानस में यही क्षेत्र हिमालय की संज्ञा से परिचित है और हिमालय की प्रायः सभी प्रमुख चोटियाँ, सभी नदियों का उद्‌गम स्थान, सभी प्रमुख तीर्थस्थल इसी भाग में पाये जाते हैं। यों तो इसकी चौड़ाई सभी स्थानों पर समान नहीं है, फिर भी औसतन इसकी चौड़ाई प्रायः २०० किलोमीटर आंकी जाती है।

हिमालय के प्राकृतिक उपक्षेत्र

साधारणतः हिमालयी क्षेत्र को तीन उपक्षेत्रों में बांटने की परम्परा रही है : पश्चिमी पहाड़ियाँ और श्रृंखलायें, मध्य पर्वतीय मेहराब या विशाल हिमालय और पूर्वी पहाड़ियाँ। भारत विभाजन (१९४७) के पश्चात पश्चिमी पहाड़ी श्रृंखलायें पाकिस्तान के भूक्षेत्र में पड़ती हैं। पूर्वी पहाड़ियों की अपनी विशेषतायें हैं। जिनकी विवेचना पृथक रूप से करना समीचीन होगा। मध्य पर्वतीय मेहराब को प्रायः दो या तीन उपक्षेत्रों में विभक्त करने की परम्परा है। पश्चिमी हिमालयी उपक्षेत्र में काश्मीर, हिमांचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश के उरांचलीय खंड एवं केन्द्रीय हिमालय के लिए नेपाल, सिक्किम (दार्जिलिंग), भूटान और अरुणांचल प्रदेश की गिनती की जाती है। परन्तु इस विभाजन का आधार राजनैतिक सीमाओं को छोड़कर कोई अन्य कारण उचित नहीं प्रतीत होता। विख्यात विद्वान एस० सी० बोस (बोस, एस० सी०, १९७२ : ३३-३७) केन्द्रीय हिमालयी उपक्षेत्र में मात्र, नेपाल को मानते हैं। दूसरी तरफ महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के विद्वान प्रो० जानकी (जानकी, पी० ए० : १९७७ : १५७) इस उपक्षेत्र में नेपाल, सिक्किम और भूटान की गिनती करते हैं।

प्राकृतिक साधनों की समीक्षा के विचार से स्वर्गीय पी० सेनगुप्त हिमालय को पश्चिमी और पूरबी दो उपक्षेत्रों में विभाजित करती हैं। जहाँ तक पहले उपक्षेत्र के प्रसार का प्रश्न है, यह काश्मीर से उत्तर प्रदेश तक फैला है। दूसरा उपक्षेत्र सिक्किम, दार्जिलिंग, भूटान और अरुणांचल को एक मानता है। पता नहीं क्यों नेपाल की गिनती नहीं की गयी है। अगर राज-

नैतिक कारण से नेपाल छोड़ दिया गया है, तो फिर भूटान क्यों शामिल किया गया है ? १९६१ की भारतीय जनगणना के आधार पर सेनगुप्त हिमालयी क्षेत्रीय जनसंख्या की समस्त भारतीय जनसंख्या का मात्र ३.१७ प्रतिशत और हिमालयी भारत को सम्पूर्ण भारत का १३.८६ प्रतिशत पाती हैं (सेनगुप्त, पी० : १९६८ : ५८-५९) । आर्थिक आधार पर सेनगुप्त हिमालय को दो उपक्षेत्रों में बांटती हैं : 'गेहूं, मकई, धान' पैदा करने वाला काश्मीर से गढ़वाल का पश्चिमी उपक्षेत्र और 'धान, मकई, मुद्रा-दायक बागवानी वाला पूर्वी उपक्षेत्र, जिसका फैलाव सिक्किम से अरुणांचल प्रदेश तक है । क्षेत्रीय विकास आयोजन के संदर्भ में आर० पी० मिश्र एवं उनके सहकर्मियों ने (मिश्र, आर० पी० एवं अन्य; १९७४: ३४-३५) हिमालयी भारत को चार विशाल क्षेत्रों (मैक्रो), छ माध्यमिक (मेसो) क्षेत्रों और कई लघु क्षेत्रों (माइक्रो) में विभाजित किया है ।

हिमालय के सांस्कृतिक क्षेत्र

अमरीकी मानववैज्ञानिकों क्लार्क व्हीजलर, अल्फ्रेड क्रोबर और मेल्विल हर्सकोविट्ज के 'सांस्कृति प्रक्षेत्र' अध्ययनों से प्रभावित होकर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता के निर्देशक प्रो० निर्मल कुमार बोस ने (बोस, एन० के० १९५६) 'भारत के सांस्कृतिक प्रखंड' नामक निबन्ध लिखा । फिर उनकी देख-रेख में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने बड़े पैमाने पर देश व्यापी 'सांस्कृतिक प्रक्षेत्र और सांस्कृतिक चिन्हों' का सर्वेक्षण किया । इस अध्ययन की विषय वस्तु कृषक जीवन में भारत की एकता और विभिन्नता की खोज थी । कृषक जीवन के सांस्कृतिक चिन्हों के सर्वेक्षण के लिए निवास के स्वरूप, आवासों की भिन्नतायें, भोज्यपदार्थ, तैलय पदार्थ, वस्त्रादि, पादुकाओं के प्रकार, गाड़ियाँ, हल, धनकुट्टी ढेंकियाँ, और तेलधानी के लिए कोल्हुओं से सम्बन्धित न्यास संग्रहित किये गये (बोस, एन० के : १९६१ : vi) । प्राय: प्रत्येक जिले से एक गाँव को अध्ययन के लिए चयन किया गया । फिर भी भूक्षेत्रीय और जनजातीय विभिन्नताओं को प्रतिनिधित्व देने के विचार से जिले विशेष से एकाधिक ग्राम अध्ययन का प्रविधान किया गया । फलस्वरूप तत्कालीन भारत के ३२२ जिलों में से ३११ जिलों के ४३० ग्रामों से अध्ययन सामग्री संग्रहित की गयी । इनके अतिरिक्त मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने 'सामाजिक चिन्ह सर्वेक्षण' और 'सीमाक्षेत्र शोध प्राजेक्ट' नामक दो महत्वाकांक्षी प्रयास भी किये ।

उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने तीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं : भारतीय कृषक जीवन, भारतीय त्यौहार और भारतीय आभूषण । इन अध्ययनों के आधार पर अल्पकालीन परिणाम निकाले जा सकते हैं : सांस्कृतिक चिन्हों का फैलाव और प्राकृतिक क्षेत्रों का विस्तार समान क्षेत्रों में होना आवश्यक नहीं । इन अध्ययनों की सहायता से सांस्कृतिक चिन्हों की सूची बनती है, न कि इससे सांस्कृतिच प्रारूपों का दिग्दर्शन । परिणामत: इन अध्ययनों के बावजूद हिमालयी क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से न तो अध्ययित हो पाया और न समझा ही जा सका । निश्चित रूप से ये प्रयास सांस्कृतिक चिन्हों को पहचानने तक ही सीमित

रहे। दूसरी ओर वैचारिक स्तर पर हिमालयी संस्कृति के कुछ प्रारूप पहचाने जा सकते हैं। प्रो० एस० सी० बोस ने मुख्यतः दो सांस्कृतिक तरंगों का उल्लेख किया है : उत्तर से तिब्बत की लामावादी संस्कृति और भारतीय नदी घाटियों की मैदानी हिन्दू संस्कृति। आपने एक तीसरे सांस्कृति विस्तार की भी परिकल्पना की है। वह है, पश्चिम की तरफ से आने वाला 'मुस्लिम-ईरानी' प्रभाव जो काश्मीरघाटी होता हुआ यमुना, सतलज जलविभाजक रेखा तक व्याप्त है।

इसी प्रकार स्वामी अग्नेहानन्द भारती भी दो मुख्य सांस्कृतिक संकुलों को पाते हैं : हिन्दू और लामावादी बौद्ध। उन्होने भारतीय ऊँची जाति के हिन्दुओं से लेकर जनजातीय स्तर तक फैले लघु समुदायों की अनवस्तता बताने का प्रयास किया है। "इस प्रकार संस्कार गत पवित्रता, निरामिष भोजन, विधवा विवाह वर्जन, आदि उच्च सोपान स्थित हिन्दू जातियों का जीवन दर्शन प्रस्तुत करते हैं। दूसरी तरफ तिब्बती भोट क्षेत्रीय निवार, अस्थायी निवास, सामिष भोजन (यहाँ तक सोरही गाय समझी जाने वाली याक मांस भक्षण), बहुपति विवाह प्रथा, सरल और सुगम तलाक व्यवस्था, विधवा विवाह की व्यवस्था आदि एक दूसरा प्रतीक इंगित करते हैं। यही नहीं, तिब्बत निवार नारी-पुरुष के बीच सहवास की व्यवस्था बताता है। इस प्रकार तिब्बती जीवन-मानदंड के समीपीय जीवन यापन करने वाले समुदाय जीवन का आनन्द उठाते प्रतीत होते हैं; हिन्दू जीवन मानदंड के समीपीय जीवन यापन करने वाले समुदाय पोंगापंथी, संस्कारवादी, और उन मूल्यों को स्वीकार करते प्रतीत होते हैं, जो नकारात्मक व्यवस्था देते हैं (भारत, ए० १९७६)।

सिक्किमी संस्कृति और राजनैतिक परिवर्तन के संदर्भ में लेखक ने तीन प्रवृत्तियाँ पायी हैं। प्रथमतः सिक्किमी सामुदायिक जीवन का मुख्याधार जनजातीयता है। व्यक्ति विशेष की गतिविधियाँ उसकी जन जातीय सदस्यता पर आश्रित होती हैं। द्वितीयः सिक्किमी लामाधर्मावालम्बी समाज का आधार एक प्रकार की तिमंजली समाज व्यवस्था है जिसकी इकाइयाँ पुरोहित (लामा), सामन्त और जनसाधारण हैं। पारिवारिक जीवन बहुपति प्रथा और सामाजिक समानता के आधार पर आश्रित है तृतीय, नेपाली हिन्दुओं में सामाजिक दूरी और संस्कारगत सोपान पर आधारित जातिव्यवस्था व्याप्त है। मूलतः एक विवाही नेपाली समाज पवित्रता, संस्कार और छुआछूत के आधार पर संगठित है। गोमांस भक्षण पूर्णतः निषिद्ध है। नेपालियों के लिए इस प्रकार की संस्कारगत श्रेष्ठता बहुपतिवादी और कथित गोमांसभक्षी लामावादियों से उन्हें भिन्न सांस्कृतिक और मानसिक संगठन प्रदान करती है (सिनहा, ए० सी० : १९७५)। इस संदर्भ में यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि जनजातियाँ स्थानीय परम्परा से आबद्ध हैं। लामावादी अपने को दलाई लामा के संरक्षण में उत्तरी बौद्ध संस्कृति से सम्बन्धित मानते हैं। दूसरी तरफ नेपाली भारत और नेपाल के पावन तीर्थ स्थलों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

इस प्रकार विशुद्ध विवेचनात्मक आधार पर हिमालयी एथनोग्राफ़ी हिमालयी समुदाय और संस्कृति को चार उपभागों में विभाजित करती है। प्रथम मुस्लिम-ईरानी- पामीर-काश्मीर हिमालय, जिसका प्रसार पश्चिम से काश्मीर घाटी तक है। इसकी दक्षिणी-पूर्वी सीमा सतलज,

यमुना जल-विभाजक रेखा मानी जा सकती है। यह संस्कृति हिमालयी क्षेत्र में मूलतः सिन्धु नदी घाटी में पायी जाती है। दूसरा, भारतीय-हिन्दू-हिमालय की दक्षिणी ढलान, जिसका प्रसार काश्मीर से भूटान के द्वारों तक दक्षिणी हिमालय क्षेत्र में है। हिमालय क्षेत्र में इस सांस्कृतिक प्रक्षेत्र का एक केन्द्र नेपाल की काठमांडू घाटी मानी जाती है। तीसरा तिब्बती-लामावादी-परम्परावाद, जिसका प्रसार लद्दाख से कामेंग (अरुणांचल प्रदेश) जिले तक हिमालय की उत्तरी ढलान पर पाया जा सकता है। चौथा, मूलतः पूर्वी हिमालय का जनजातीय संसार। इस सांस्कृतिक क्षेत्र का फैलाव अरुणांचल प्रदेश से पश्चिम की तरफ सीमित होता हुआ लिम्बुआन (पूर्वी नेपाल) तक जाता है। इस क्षेत्र की जनजातियाँ जीवात्मावादी या प्रकृति पूजक हैं। आये दिन धर्म परिवर्तन से ये लोग क्रमशः हिन्दू, बौद्ध और ईसाई बनते जा रहे हैं।

सांस्कृतिक सीमान्त का संदर्भ

हमारा विचार है कि हिमालयी सांस्कृतिक उपक्षेत्रों को समझने के लिए एडवर्ड शिल्स (शिल्स, ई० : १९६१) की 'केन्द्र और छोर या सीमान्त' की परिकल्पना सहायक होगी। इनके अनुसार प्रत्येक "समाज का एक केन्द्र होता है। समाज की संरचना में एक केन्द्रीय क्षेत्र होता है। यह केन्द्रीय क्षेत्र विभिन्न प्रकार से पर्यावरण पर अपना प्रभाव प्रसारित करता रहता है।... यह केन्द्रीय क्षेत्र भूमि के विस्तार के रूप में नहीं समझा जा सकता। इसका अस्तित्व प्रायः क्षेत्र विशेष में निश्चित होता है।... इसका तात्पर्य ज्यामीति या भूगोल से न होकर मूल्यों और मान्यताओं की मर्यादा से होता है। यह समाज को मर्यादित करने वाले प्रतीकों, मूल्यों और मान्यताओं के व्यवस्था केन्द्र में अवस्थित होता है।" इसको एक दूसरे दृष्टिकोण से देखने पर हम पायेंगे कि विशाल क्षेत्रीय समुदायों में अनेक प्रकार की उप-पद्धतियाँ होती हैं। समाज व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, धर्माचरण व्यवस्था आदि उपपद्धतियाँ एक सामुहिक अनुशासन, प्रशासन, अधिकारी वर्ग, व्यक्तिगत सम्पर्क, अनुबन्ध आदि से संगठित होती हैं। फिर इन पद्धतियों का प्रशासनिक सूत्र होता है, जिसका जनाधार व्यक्तिगत क्रियायें होती हैं। इस तरह के केन्द्रीय क्षेत्रों की गतिशीलता सामूहिक सहमति के आधार पर होती है। इस प्रकार के केन्द्रीय क्षेत्रों की क्रियाओं को वैधता प्रदान करने वाले पावन स्थलों, मान्य मूल्यों और अधिकार जन्य व्यक्ति ही केन्द्र के प्रतिनिधि स्वरूप पहचाने जाते हैं। वास्तव में केन्द्र मूल्य, मान्यताओं, विश्वासों और आदर्शों का द्योतक है। दूसरी तरफ केन्द्र से दूर सीमान्त की तरफ प्रस्थान करने पर क्रमशः ये मूल्य मान्यतायें, विश्वास और आदर्श क्षीणतर होते चले जाते हैं। यहाँ तक कि सीमान्त पर पहुंचकर ये नकारात्मक हो उठते हैं। यह भी एक कारण है कि सीमान्त क्षेत्रों में दुहरी मूल्य-व्यवस्था, मान्यतायें और विश्वास पद्धतियाँ पायी जाती हैं।

केन्द्र और सीमान्त की उपरोक्त परिकल्पना के संदर्भ में यदि हम हिमालय के उपक्षेत्रों की समीक्षा करें तो कुछ मूल आधार मिलते हैं। प्रजाति, भाषा, प्रमुख आर्थिक क्रियायें, सामाजिक संगठन, वस्तुसंस्कृति, धार्मिक और सभ्यता केन्द्रों के विचार से प्रथम तीन हिमालयी

सांस्कृतिक उपक्षेत्रों को पहचाना जा सकता है। प्रथम सांस्कृतिक क्षेत्र विभिन्न प्रकार से ईरान या काबुल घाटी में पायी जाने वाली संस्कृति केन्द्रों का पूर्वी प्रसार है। प्रजातीय, भाषाई, कबाइली संगठनों, बागबानी जन्य एवं मूल्य-दायक मरुस्थली अर्थव्यवस्था एवं वस्तुसंस्कृति के दृष्टिकोश से काश्मीर पश्चिम एशियाई इस्लामी संस्कृति का सीमान्त है। इसी प्रकार धर्म और सभ्यता के विचार से भी इस उपक्षेत्र का केन्द्र इस्लामी मध्यपूर्व है। इस प्रकार दूसरे सांस्कृतिक उपक्षेत्र का प्रजातीय, भाषाई, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक केन्द्र गंगा का मैदान या उससे भी दक्षिण में विन्ध्याचल पार की भूमि है। तीसरा सांस्कृतिक उपक्षेत्र भी तिब्बती सांस्कृतिक केन्द्र का दक्षिणी प्रसार प्रतीत होता है। परन्तु पूर्वी हिमालय का जन-जातीय संसार अपनी अलग विशेषता रखता है। प्रजातीय, भाषाई, सामाजिक सँगठन, मूल आर्थिक क्रिया-कलाप, वस्तुसंस्कृति आदि में ये दक्षिण-पूर्वी एशिया के समुदायों के नजदीक हैं। परन्तु धर्म और सभ्यता के विचार से इनका संबंध अन्य तीनों उपक्षेत्रों के समान किसी प्राचीन और संगठित सामाजिक-सांस्कृतिक केन्द्र से नहीं है। ये अपने स्वयं की स्थानीय संस्कृति और क्षीण धार्मिक पद्धतियों में बंधे हैं।

इस प्रकार ये चारों उपक्षेत्र विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक सीमान्त प्रस्तुत करते हैं। प्रथम सांस्कृतिक क्षेत्र सिन्धु नदी घाटी तक सीमित है। दूसरा उपक्षेत्र कमोवेश गंगा नदी घाटी की सीमा रेखा में आ सकता है। किसी सीमा तक चौथा उपक्षेत्र ब्रह्मपुत्र नदी का जल विस्तार क्षेत्र तक पाया जा सकता है। लेकिन तीसरा सांस्कृतिक उपक्षेत्र तिब्बती पठार का दक्षिणी छोर और हिमालय का उत्तरी ढलान है। प्रथम तीन सीमान्तीय सांस्कृतिक उपक्षेत्रों के केन्द्र क्रमशः पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में अवस्थित है। जहाँ तक चौथे सांस्कृतिक उपक्षेत्र का प्रश्न है, यह एक स्थानीय ईकाई है और किसी प्रकार के केन्द्र की सीमा में नहीं बंधता।

सन्दर्भ

1. Janki, B. A. 1977 '*Some Aspects of Political Geography of India* Geography Series No. 8; M. S. 11, Baroda.

2. Bose, N. K. 1956 'Cultural Zones of India, *Geographical Review of India*, Vol. XVIII (4)

3. Bose, N. K. 1961 (ed) *Peasant Life in India : A Study in Indian Unity and Diversity*, Memoir No. 8, A. S. I., Calcutta.

4. Bose, S. C. 1972 *Geography of Himalaya*, N. B. T. Delhi.

5.	Misra, R. P. and others	1974	*Regional Development Planning in India : X New Strasegy*, Vikas, N. Delhi.
6.	Bharti, A.	1976	The Himalaya as a Cultural Area in *Main Currents in Indian Sociology* (ed) Gupta, G. R. Vol. 1. Vikas New Delhi.
7.	Sengupta, P. and G. Sodasyuc	1968	*Economic Regionlization in India*, Delhi.
8.	Sinha, A. C.	1975	*Politics of Sikkim*, Thomson, N. Delhi.
9.	Shills, A.	1961	'Centre and Perephery' in *The Logic of Personal Knowledge*, Essays presented to Michael Polani on the 70th Birthday, London.